संथाली विद्रोह एवं संथाली जनजाति

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में 30 जून को संथाल हूल विद्रोह की शुरुआत की 169 वीं वर्षगांठ मनाई गई।
- 30 जून 1855 को शुरू होने वाला संथाल टूल विद्रोह ब्रिटिश औपनिवेशिक उपनिवेशों के खिलाफ पहले किसान विद्रोह में से एक था।
- हालांकि संथालों ने अपने जीवन की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं की सुरक्षा के प्रयास के लिए ऊंची जातियों, जमीदारों और साहूकारों के खिलाफ भी लड़ाइयां लड़ी जिन्हें 'दिकु' नाम से वर्णित किया गया है।

संथाल जनजाति -

- संथाल भारतीय उपमहाद्वीप का ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषी 'मुंडा' नामक जातीय समूह है।
- विभिन्न इतिहासकारों के अनुसार ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा बोलने वाले यह समूह संभवत: 2000 से 1500 ई पूर्व के बीच में इंडोचीन से ओडिसा के तट पर आए।
- तत्पश्चात यह जनजातीय समूह दक्षिण पूर्व एशिया में फैलकर स्थानीय भारतीय आबादी के साथ घुल-मिल गया।
- हालांकि संथाल लोककथाओं के अनुसार संथालों की मातृभूमि झारखंड के हजारीबाग जिले के 'अहुरी' क्षेत्र को बताया गया है जहां से ये छोटा नागपुर पठार, मालदा, पाटकुम और सौंत में फैल गए।
- डाल्टन के अनुसार इन्हीं स्थानों पर इनका नाम बदलकर खखार समूह से संथाल कर दिया गया।
- 1795 ईस्वी में संथालों ने ऐतिहासिक अभिलेखों में अपना नाम संतूर के रूप में दर्ज कराया।
- वर्तमान में संथाल जनजातीय समूह जनसंख्या की दृष्टि से मुख्य रूप में झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, असम और त्रिपुरा राज्य में पाए जाते हैं।

Result Mitra

- संथाल जनजाति समूह झारखंड और पश्चिम बंगाल राज्य का सबसे बड़ा जनजातीय समूह है।
- भारत के अलावा बांग्लादेश और नेपाल में भी इनकी अच्छी खासी आबादी है।
- संथाल जनजातीय समूह के लोग संथाली भाषा बोलते हैं।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में संथाली जनजातीय समूह की कुल संख्या लगभग 7.5 मिलियन है।

संथाल हूल विद्रोह -

- **पृष्ठभूमि** –

- औपनिवेशिक शासन काल के दौरान संथाली जनजातीय समूह मुख्य रूप से स्वर्ण रेखा नदी के किनारे फैले हजारीबाग और मेदिनीपुर क्षेत्र में निवास करते थे जो बंगाल प्रेसीडेंसी के अंतर्गत आता था।
- 1770 में आए बंगाल में भयंकर अकाल के कारण संथालों का जनजीवन काफी प्रभावित हुआ क्योंकि ये अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि एवं वन उत्पादों पर निर्भर थे।
- वर्ष 1832 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्तमान झारखंड के दामिन-ए-कोह क्षेत्र का सीमांकन करते हुए इस क्षेत्र में पहले से मौजूद 'पहाड़ियां जनजाति' को जंगलों को साफ करके कृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- हालांकि 'पहाड़ियां जनजातीय' समूह में ईस्ट इंडिया कंपनी के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया जिसके कारण अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में संथालों को बसने एवं कृषि कार्य करने के लिए आमंत्रित किया।
- अंग्रेजों द्वारा बड़े पैमाने पर भूमि तथा आर्थिक सुविधाओं के वादे से प्रोत्साहित होकर बड़ी संख्या में संथाल जनजातीय समूह दामिन-ए-कोह क्षेत्र के घालभूम, मानभूम, हजारीबाग और मिदनापुर के क्षेत्र के आस-पास आकर बस गए।
- 1830 से 1850 के बीच इस क्षेत्र में संथालियों की जनसंख्या अप्रत्याशित रूप से 3000 से बढ़कर 83 हजार हो गई।
- राजस्व के वृद्धि के साथ ही इस क्षेत्र में महाजन, जमींदार, ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा नियोजित उधारदाताओं एवं अन्य विचौलिये का प्रभाव बढ़ गया।
- कई संथालियों द्वारा महाजन, जमींदार एवं ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा नियोजित उधारदाताओं द्वारा उच्च दरों पर ऋण लिया गया था जिसे चुकाने में असमर्थता के कारण उनकी जमीनें जबरन छीन ली गई तथा उन्हें बंधुआ मजदूरी करने के लिए मजबूर किया जाने लगा।

विद्रोह की शुरुआत -

- ईस्ट इंडिया कंपनी की उपरोक्त राजस्व प्रणाली, सूदखोरी, जमींदारी प्रथा से तंग आकर चार संथाल भाइयों सिदो, कान्हो, चांद एवं भैरव मूर्मो ने अपनी दो बहनों फूलों और झानो के साथ अंग्रेजों के खिलाफ 30 जून 1855 को विद्रोह का ऐलान कर दिया।
- अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह के ऐलान के साथ लगभग 60 हजार संथाली मुर्मू भाइयों के नेतृत्व में अंग्रेजों से लड़ाई के लिए आगे आए।
- विद्रोह की घोषणा के तुरंत बाद ही संथालियों ने मुर्मू भाइयों के नेतृत्व में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर जमींदारों, सूदखोरों एवं साहूकारों पर हमला बोल दिया।

Result Mitra

- मुर्मू भाइयों ने इस विद्रोह के दौरान समानांतर सरकार चलाने के लिए लगभग दस हजार संथालों की एक अलग टीम सिद्धू मुर्मू के नेतृत्व में तैयार की गई जिसका मुख्य उद्देश्य संथाल बाहुल्य क्षेत्र में खुद का कानून बनाकर तथा लागू करके टैक्स एकत्र करना था।
- विद्रोह को दबाने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा एक छोटी सैन्य टुकड़ी भेजी गई लेकिन शस्त्र संथालों की भीड़ एवं आक्रोश देखकर वे वापस आ गए।
- तत्पश्चात इस उग्र विद्रोह को दबाने के लिए ईस्ट इंडिया कंपनी ने स्थानीय जमींदारों एवं मुर्शिदाबाद के नवाब के नेतृत्व में बड़ी संख्या में सैन्य दल को भेजा गया।
- संथाली जो गुरिल्ला युद्ध में पारंगत थे कि अंग्रेजी सैन्य बलों के साथ कहलगांव, सूरी, रघुनाथपुर और मुंकटोरा जैसे क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में खूनी झड़प हुई।
- इस विद्रोह में संथालों को गैर-आदिवासियों का भी साथ मिला जिसने विद्रोह के दौरान एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विद्रोहियों को सूचना एवं हथियार उपलब्ध कराने का काम किया।
- संथालियों ने इस विद्रोह में अंग्रेजों का सामना काफी वीरता से किया लेकिन सिद्धू एवं कान्हू मुर्मू की अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तारी के बाद 3 जनवरी 1856 को यह विद्रोह समाप्त हो गया।
- लगभग सात महीने चलने वाले इस विद्रोह में करीब 15 हजार से अधिक संथाली मारे गए एवं 10 हजार से अधिक संथालियों के गांव नष्ट कर दिए गए।
- अंग्रेजों ने 9 अगस्त 1855 को सिद्धू मुर्मू एवं फरवरी 1856 में कान्हू मुर्मू को फांसी दे दी।

एसपीटी एक्ट -

- एसपीटीएस सीएनटी एक्ट (Santhal Pargana Act - SPT) या संथाल परगना किरायेदारी अधिनियम - 1876, अंग्रेजों द्वारा अधिनियमित एक कानून था जो संथाली हूल विद्रोह के परिणामस्वरूप आया।
- यह कानून आदिवासी भूमि (ग्रामीण या शहरी) को गैर-आदिवासियों को हस्तांतरित करने पर रोक लगाता है।
- इस अधिनियम के तहत संथालों को अपनी भूमि पर स्वशासन का अधिकार दिया गया।

सीएनटी एक्ट

- सीएनटी एक्ट यानि छोटानागपुर किरायेदारी अधिनियम - 1908 अंग्रेजों द्वारा बिरसा मुंडा के नेतृत्व में लड़ी गई मुंडा विद्रोह के बाद लाया गया।
- इस अधिनियम के तहत जिला कलेक्टर की अनुमति से कुछ भौगोलिक क्षेत्र के भीतर आदिवासियों को अपनी समूह में ही भूमि हस्तांतरण की अनुमति देता है।
- इस अधिनियम के तहत आदिवासी और दलितों की भूमि का गैर-आदिवासी समूहों को बिक्री पर रोक लगा दी गई।

अन्य जनजातीय विद्रोह -

पाइका विद्रोह (1817)

भील विद्रोह (1818)

कोल विद्रोह (1831-32)

Result Mitra

खासी विद्रोह (1827-33)

पागलपंथी विद्रोह (1825-50)

कच्छ का विद्रोह (1819-31)

रामोसी विद्रोह (1825-26 एवं 1839-41)

मुंडा विद्रोह (1899-1900)

अहोम विद्रोह (1828-33)

संथालों की बहुलता वाले राज्य -

झारखंड (27.52 लाख)

पश्चिम बंगाल (25.12 लाख)

उड़ीसा (8.94 लाख)

बिहार (4.06 लाख)

असम (2.13 लाख)

Result Mitra